DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

शब्द शक्तियां

LIVE 27-07-2024 09:00 AM

शब्द-शक्तियाँ

❖ भाषा के प्रत्येक शब्द का कोई न कोई अर्थ होता है। शब्द का अर्थ पता करने की अनेक विधियाँ हैं। इनमें से सबसे ज़्यादा प्रयोग की जाने वाली विधि है - नए शब्दों का ज्ञान और अभ्यास। हम आसपास के लोगों के साथ भाषा का प्रयोग करते हुए बहुत से शब्दों का अर्थ जान जाते हैं। लेकिन इस तरीके से भाषा के सभी शब्दों का अर्थ पता नहीं किया जा सकता। कुछ शब्दों का अर्थ जानने के लिए अनुभव, विचार या प्रसंग जानने की भी ज़रूरत होती है। इस प्रकार शब्द का अर्थ जानने की अनेक विधियाँ हैं। व्याकरण की भाषा में इन्हें शब्द की शक्तियाँ कहा जाता है।

❖ शब्द- शक्तियाँ शब्दों के अर्थ जानने की विधियाँ हैं। काव्य शास्त्रियों के अनुसार इनकी संख्या तीन है। ये हैं- 1. अभिधा, 2. लक्षणा और 3. व्यंजना। इन शक्तियों के द्वारा शब्द का अर्थ, उनके विस्तार और सीमाओं का पता लगता है। इन शक्तियों के प्रयोग से भाषा की क्षमता बढ़ती है और उसमें सौन्दर्य तथा चमत्कार बढ़ता है। काव्य और साहित्य की दृष्टि से इन शक्तियों का बहुत महत्त्व है। इनका परिचय इस प्रकार है-

अभिधा शक्ति

❖ किसी शब्द का उच्चारण करते ही जो अर्थ सबसे पहले पता लगता है उसे अभिधार्थ कहा जाता है। शब्द द्वारा स्वयं इसकी ओर संकेत करने के कारण इसे संकेतार्थ भी कहा जाता है। इस अर्थ को जानने के लिए किसी विशेष प्रयास की ज़रूरत नहीं होती; इस कारण इसे मुख्यार्थ माना जाता है। साहित्य दर्पण के अनुसार मुख्यार्थ ग्रहण करने के आठ प्रमुख साधन या उपाय हैं– व्याकरण, उपमान, शब्दकोश, आप्तवाक्य (विद्वानों द्वारा प्रयोग), लोकव्यवहार, वाक्यशेष, व्याख्या और संसर्ग। इस अर्थ का बोध कराने वाली शब्दशक्ति को अभिधावृत्ति कहा जाता है।

❖ **उदाहरण**-"सुबोध की बातें सुनकर लगता है कि वह किसी सभ्य परिवार का शिक्षित युवक है।"

❖ इस वाक्य में जो कहा गया है उससे यही सूचना मिलती है कि सुबोध की भाषा ऐसी स्पष्ट और अच्छी है जैसी सुशिक्षित लोग बोलते हैं और उसका लहजा शालीन है जैसा कि सभ्य और शरीफ लोगों के घर में प्रयोग होता है। इस वाक्य का कोई छिपा हुआ अर्थ नहीं है, इसलिए कहा जा सकता है कि यह वाक्य या इसमें प्रयुक्त शब्द अभिधात्मक है।

लक्षणा शक्ति

❖ अभिधार्थ या मुख्यार्थ से शब्द या वाक्य का मतलब स्पष्ट न होने पर उनके उद्देश्य या लक्षणों के मुताबिक अर्थ का अनुमान लगाकर जो अर्थ निकाला जाए उसे लक्ष्यार्थ कहा जाता है। लक्षणा वाले शब्दों के प्रचलित अर्थ को मानने से बात समझ नहीं आती बल्कि पहेली जैसी लगती है। इसलिए अर्थ का अनुमान लक्षणों के हिसाब से लगाया जाता है।

अभिधा

❖ मुख्यार्थ को छोड़कर लक्ष्यार्थ की ओर बढ़ने या उसकी खोज के लिए चार कारण होते हैं।

(1) मुख्यार्थ का सिद्ध न होना या उपयुक्त प्रतीत न होना।

(2) मुख्यार्थ का लक्ष्यार्थ से सम्बन्ध होना।

(3) रूढ़ि या परम्परा के अनुसार मुख्यार्थ के स्थान पर लक्ष्यार्थ का प्रचलन

(4) अपने उद्देश्य के अनुसार मुख्यार्थ से भिन्न किसी अर्थ को स्वीकार करना। इस अर्थ की खोज में प्रवृत्त करने वाली शक्ति को लक्षणा वृत्ति के नाम से जाना जाता है।

❖ **उदाहरण–** "हमारी मंगला तो बिल्कुल गाय है वह भला किसी को क्या तंग करेगी।"

❖ इस वाक्य का अभिधा से पता लगने वाले वाले अर्थ के मुताबिक **'मंगला'** किसी गाय का नाम है। लेकिन लक्षणा के प्रयोग से ज्ञान होता है कि **मंगला एक लड़की है** जिसमें **चतुराई और उग्रता के अवगुण नहीं हैं।** यहाँ **'गाय'** शब्द के प्रयोग से **मंगला का सीधापन और सादगी प्रकट होती है।** वाक्य का सही भाव है।

व्यंजना शक्ति

❖ मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ के प्रयोग से शब्द या वाक्य का सही अर्थ पता न चलने पर उद्देश्य या प्रसंग के अनुमान से अर्थग्रहण करने को व्यंजना कहते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा प्राप्त अर्थ को व्यंग्यार्थ कहा जाता है। साहित्य की दृष्टि से इसे सर्वोत्तम अर्थ कहा जाता है क्योंकि इसे जानने के लिए सोच-विचार की ज़रूरत होती है। व्यंजना वाले वाक्य को 'उत्तम वाक्य' कहा जाता है। इसका अर्थ जानने के लिए प्रसंग और भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है।

❖ व्यंग्यात्मक वाक्य पहली नज़र में अजीब या ग़लत लग सकते हैं लेकिन समझ आने पर चमत्कार का अनुभव होता है।

उदाहरण– "प्रतिभा तो खरा सोना है। उसे वरण करने वाला सौभाग्यशाली होगा।" इस वाक्य का अभिधार्थ तो लिया नहीं जा सकता क्योंकि सोने का वरण नहीं किया जाता। इसका लक्षणा अर्थ भी काम का नहीं होगा क्योंकि उससे ज्यादा से ज्यादा यही अनुमान होगा कि प्रतिभा कोई लड़की है जिसका रंग सोने जैसा है। व्यंजना से अनुमान होता है कि प्रतिभा भी गुणवान और सच्चरित्र है। वह देखने और व्यवहार करने में आकर्षक है। यही अर्थ सबसे ज़्यादा सन्तोषप्रद है।

1. अर्थबोध कराने के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

(a) अभिधा शब्दशक्ति लक्षणा पर आश्रित होती है।

(b) लक्षणा शब्दशक्ति व्यंजना पर आश्रित होती है।

(c) अभिधा शब्दशक्ति लक्षणा व व्यंजना दोनों पर आश्रित होती है।

(d) लक्षणा एवं व्यंजना दोनों शब्द शक्तियाँ अभिधा पर आश्रित होती हैं।

2.'अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन।

अधम व्यंजना रस-विरस, उलटी कहत नवीन।'

उपर्युक्त कथन किस रीतिकालीन कवि का है ?

(a) मतिराम

(b) केशवदास

(c) देव

(d) बिहारी

3.इनमें कौन शब्द शक्ति का भेद नहीं है ?

(a) व्यंजना

(b) श्रोता

(c) अभिधा

(d) लक्षणा

4.शब्द शक्ति के मुख्यत: कितने भेद हैं?

(a) दो

(b) तीन

(c) चार

(d) पाँच

अभिधा

लक्षणा

व्यंजना

5.शब्द के अर्थ बोधक आधार को क्या कहते हैं ?

(a) शब्दार्थ

(b) शब्दयोग

(c) शब्द शक्ति

(d) शब्दमूल

6.'मुख्यार्थबाधा' किस शब्द-शक्ति का लक्षण है ?

(a) अभिधा

(b) लक्षणा

(c) व्यंजना

(d) किसी का नहीं

7."शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ प्रकट होता है, कहलाती है-

(a) लक्षणा

(b) व्यंजना

(c) शब्दशक्ति

(d) अभिधा

8. मुख्यार्थ का बोध कराने वाले व्यापार को कहते हैं-

(a) अभिधा शक्ति

(b) व्यंजना शक्ति

(c) लक्षणा शक्ति

(d) उपर्युक्त सभी

9. किस शब्दशक्ति की प्रतीति सबसे पहले हुआ करती है ?

(a) व्यंजना

(b) लक्षणा

(c) अभिधा

(d) इनमें से कोई नहीं

10. व्यंजना शब्द - शक्ति का सम्बन्ध किससे है ?

(a) मुख्यार्थ

(b) वाच्यार्थ

(c) लक्ष्यार्थ

(d) व्यंग्यार्थ

11. चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।
काव्य पंक्तियों में कौन-सी शब्द शक्ति है ?

(a) अभिधा

(b) लक्षणा

(c) व्यंजना

(d) विलक्षणा

12. 'मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढ़ितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।'
इस कथन के आचार्य हैं :

(a) कुन्तक

(b) आनन्दवर्धन

(c) विश्वनाथ

(d) मम्मट

13. 'रस की अनुभूति कराने में अभिधा शब्द-शक्ति ही प्रधान है।' यह मान्यता है -

(a) आचार्य भामह की

(b) आचार्य भट्ट नायक की

(c) आचार्य कुन्तक की

(d) आचार्य दण्डी की

14. 'सिन्धु सेज पर धरा-वधू अब तनिक संकुचित बैठी सी' - इस अवतरण में कौन-सी शब्दशक्ति है ?

(a) अभिधा

(b) व्यंजना

(c) तात्पर्य

(d) लक्षणा

15. अधोलिखित पंक्तियों में शब्द शक्ति है ?

आए जोग सिखावन पाँडे।

परमारथी पुराननि लादे, ज्यौं बनजारे हाँड़े ।।

(a) व्यंजना

(b) अभिधा

(c) तात्पर्या

(d) लक्षणा

16. जब अर्थ का ग्रहण अभिधा से न हो किन्तु उससे सम्बद्ध हो, तो अर्थग्रहण कराने वाली शब्द - शक्ति को कहेंगे-

(a) व्यंजना

(b) ध्वनि

(c) लक्षणा

(d) अभिधा

17. "जब सिंह तलवार लेकर उतरा तो गीदड़ भाग गए" - इस वाक्य में कौन-सी शब्दशक्ति है ?

(a) अभिधा

(b) लक्षणा

(c) व्यंजना

(d) कोई नहीं

18. 'लक्षणा' शब्दशक्ति द्वारा शब्द के जिस अर्थ का बोध होता है- उसे क्या कहेंगे?

(a) व्यंग्यार्थ

(b) परार्थ

(c) लक्ष्यार्थ

(d) अभिधार्थ

19. "मनहुँ उमगि अंग-अंग छवि छलकै" -तुलसी की इस पंक्ति में कौन - सी शब्द शक्ति है ?

(a) अभिधा

(b) लक्षणा

(c) व्यंजना

(d) इनमें से कोई नहीं

20. 'बनन में बागन में बगरो बसन्त है' - पद्माकर की इस पंक्ति का अर्थ शब्द की किस शक्ति से ग्रहण किया जा सकेगा ?

(a) अभिधा से

(b) लक्षणा से

(c) व्यंजना से

(d) इन सभी से

21. "जब शेर आया तो युद्ध क्षेत्र से गीदड़ भाग गये। " में कौन-सी शब्द शक्ति है ?

(a) संयुक्त

(b) लक्षणा

(c) व्यंजना

(d) अभिधा

22. प्रयोजनवती लक्षणा के भेद हैं-

(a) गौणी - शुद्धा

(b) शाब्दी - आर्थी

(c) गौणी - रूढ़ा

(d) शुद्धा - रूढ़ा

23. चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर॥
उपर्युक्त दोहे में कौन-सी शब्दशक्ति है ?

(a) अभिधा

(b) लक्षणा

(c) व्यंजना

(d) उपर्युक्त सभी

24. 'चलती चाकी देख के दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय '
प्रस्तुत दोहे में प्रयुक्त शब्द शक्ति है-

(a) अभिधा

(b) लक्षणा

(c) व्यंजना

(d) इनमें से कोई नहीं

25. 'को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर' में कौन-सी व्यंजना है ?

(a) शाब्दी व्यंजना

(b) आर्थी व्यंजना

(c) रस व्यंजना

(d) इनमें से कोई नहीं

26. 'बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से 'प्रसाद' की इस पंक्ति का अर्थ किस शब्दशक्ति से ग्रहण होगा ?

(a) अभिधा से

(b) लक्षणा से

(c) व्यंजना से

(d) इन सभी से

27. औचित्य के आधार पर होता है-

(a) सामर्थ्य-निर्णय

(b) संनिधि-निर्णय

(c) अर्थ-निर्णय

(d) उपर्युक्त सभी

28. उषा सुनहले तीर बरसती,
जय लक्ष्मी-सी उदित हुई,
उधर पराजित काल रात्रि भी
जल में अन्तर्निहित हुई '
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सी शब्द- शक्ति है ?

(a) अभिधा

(b) व्यंजना

(c) लक्षणा

(d) इनमें से सभी